an>

Title: Need to do away with the process of interview in recruitment of gazetted & non-gazetted cadre in order to maintain transparency.

श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) : उपाध्यक्ष महोदय, दलित मुक्ति का मौलिक स्रोत बाबा साहब अंबेडकर का दर्शन है। 29 अक्तूबर, 1942 को बाबा साहब अंबेडकर ने भारत के गवर्नर जनरल को एक दलित अधिकार का लंबा ज्ञापन सौंपा था और पूरी की पूरी टैक्स्टेड अंबेडकर ग्रंथावलि मौजूद है जिसमें उन्होंने महात्मा फुले से लेकर पेरियार, और बाद में जब भारत सरकार का संविधान बना तो उसमें कोठारी आयोग की कमेटी बनी थी और मुचकुंद द्विवेदी कमेटी भी बाद में बनी थी। उन्होंने इस देश की शैक्षणिक व्यवस्था पर सवाल खड़ा किया था कि वंचित वर्ग, समाज के दलित और अल्पसंख्यकों के लिए यदि एजुकेशन की वकालत हो तो उसको निजी क्षेत्रों में एजुकेशन को नहीं दिया जाना चाहिए, पूंजीपतियों के हाथ में नहीं दिया जाना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में कॉमन और कंपलसरी एजुकेशन की बात उन्होंने कही थी।

मैं आपको एक रिपोर्ट बताना चाहता हूँ कि यह सिर्फ उच्च शिक्षण संस्थानों तक ही सीमित नहीं है। 2010 में दिल्ली के वर्द्धमान मैडिकल कालेज के 35 छात्रों के सामूहिक रूप से फेल होने के मामले ने जब तूल पकड़ा तो अनुसूचित जनजाति आयोग ने जांच कमेटी बनाई जिसमें भेदभाव के आरोप लगाए गए। पहली बार प्रो. थोराट कमेटी का गठन किया गया जिसमें दलित छात्रों के साथ हो रहे जातीय भेदभाव की जाँच आई। अभी 39 लोगों ने आत्महत्या की है जिसमें से 21 दलित हैं जो आया है कि भेदभाव के कारण हुआ है कि कैसे इंटरव्यू में भेदभाव किया जाता है। अभी एक मामला आया है आई.आई.टी. के दलित छात्रों की स्थिति पर। रिज़र्वेशन में 1237 सीटें दलितों के लिए आरक्षित की गई जिसमें 800 सीटें हमेशा खाली चली जाती हैं और दलित छात्र मेहनत मशक्कत करके पहुँच जाते हैं तो उन्हें साल के अंत तक सभी दलितों को इंटरव्यू या किसी रैंकिंग के नाम पर उनको निकाल दिया जाता है। यही स्थिति 88 फीसदी स्कूलों की है। यही स्थिति 74 फीसदी दलित लड़कों और 71 फीसदी लड़कियों की है। आपको यदि हम बताएँ तो आपको आश्चर्य होगा कि एस.टी. टीचर 1.99, एस.सी. टीचर 6.95, मुस्लिम टीचर 3.2 और ओबीसी टीचर 21.2 प्रतिशत हैं। मतलब यह कि हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा जिसकी आबादी है, वहाँ यदि एजुकेशन में शिक्षक या प्रोफेसर किसी को आप लीजिएगा तो उसकी संख्या कहीं 1.3 और कहीं 6.3 आती है। उसी में बाबा साहब अंबेडकर ने जो लास्ट में कहा था कि दलित मुक्ति की चर्चा जब भी और जहाँ भी होती है, उसका प्रस्थान बिन्दु नौकरियों में रिज़र्वेशन पर आता है और अंत में भी यही प्रश्न उठता है। जो वेमुला आत्महत्या है या इसके पहले भी जो आत्महत्या हुई और आगे भी जो संभावना है आत्महत्या की, मेरा आपसे आग्रह है कि यह जो इंटरव्यू सिस्टम है जिसमें आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने भी फोर्थ ग्रेड और थर्ड ग्रेड में इंटरव्यू खत्म करने की बात कही है, लेकिन मेरा कहना है कि कुछ सैलेक्टेड जो रॉ या सीबीआई जैसे संस्थान हैं, उसके अलावा नीचे जितनी भी प्रतियोगिता है, उसमें वंचित समाज के जो बच्चे हैं, जो बिलो पावर्टी लाइन हैं, गरीबी रेखा के नीचे हैं और एस.सी, एस.टी. और मुस्लिम हैं, उनमें किसी भी कीमत पर प्रतियोगिता में से इंटरव्यू को समाप्त किया जाना चाहिए। जब तक यह इंटरव्यू सिस्टम रहेगा, दलित, एस.सी., एस.टी. और समाज के वंचित वर्गों का शोषण होगा, वेमूला आत्महत्या करते रहेंगे और जब तक हमारी एजुकेशन और इकोनामी डैवलप नहीं होगी, एजुकेशन पाने में यदि हिन्दुस्तान के दलित डैवलप नहीं होंगे तो हिन्दुस्तान की कुर्सी पर देश का प्रधान मंत्री कभी दलित या एस.सी., एस.टी. नहीं बनेगा। हम चाहते हैं कि इंटरव्यू किसी भी कीमत पर खत्म हो और जितने निजी क्षेत्र में ठेका से लेकर सब कुछ है, उसमें दलित, एस.सी., एस.टी. और माइनारिटीज़ सबका रिज़र्वेशन हो, यह मेरी मांग है। सरकार इसको गंभीरता से ले, यही मैं कहना चाहता हूँ।

HON. DEPUTY-SPEAKER:

Dr. Kirit P.Solanki and

Kunwar Pushpendra Singh Chandel are permitted to associate with the issue raised by Shri Rajesh Ranjan.